चित्रकारीसार

दूसरा भाग

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

श्रीयुत विद्यातिविज्ञ श्रीसाहब डैरेक्टर आफ़ पबलिक
इनस्ट्रक्शन बहादुर के सरिश्ते में
पश्चिमोत्तरदेशीय चटशालों के विद्यार्थियों
के लिये
पण्डित बंशीधर ने
असूल नक्काशी से उल्था कर बनाया ॥

44 88

इलाहाबाद
गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गया ॥
सन् १८७५ ई०

4th Edition, 5,000 Copies,
Price per copy, 2 as., 6 pie.

चौथी बार ५,००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक =)॥ ६ पाई

चित्रकारीसार

दूसरा भाग ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी
श्रीयुत लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

श्रीयुत विद्यातिविद्य साहिब डेरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन
बहादुर के सरिश्ते में
पश्चिमोत्तरदेशीय चटशालों के विद्यार्थियों
के लिये

पण्डित बंशीधर ने

असल नक़्क़ाशी से उल्था कर बनाया

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया ॥
सन् १८७५ ई०

भूमिका

गुण और विद्या के ग्राहकों को यह बात छिपी न रहे कि मंदराज के डाकृर हंटर साहिब ने कुंभकारी विद्या के सिद्धांतों के लिये एक पाठशाला नियत की है और एक कारखाना भी बनाया है जिस में इस विद्या की बातें सिखाई जाती हैं और बरतनों पर बेल बूटे बनाने की रीति बताई जाती है इसके विशेष वे साहिब एक भाग भी इस विद्या के सिद्धांत और रीतों के विषय में हर महीने में छापकर जारी करते हैं उन में से पहिले भाग का हिन्दी उल्था चित्रकारीसार नाम सन् १८५३ ई० में छापा गया इस प्रयोजन से कि नवसिखों को रेखागणित के नेमों के सीखने में सहायता पहुंचे और चित्रकारी विद्या के सिद्धांत भी जान पड़ें उस में दस पाठ थे अब यह दूसरा भाग ग्यारहवें पाठ से सब के लाभ के लिये छापा जाता है इसके पढ़ने से चित्रकारी विद्या की रीतें जानी जायंगी और जो हर तरह की रचना इस विद्या संबंधी है उसके देखनेवालों को अभिरुचि होगी ॥

चित्रकारीसार

दूसरा भाग ॥

ग्यारहवां पाठ ॥

नवें पाठ में समधरातल वर्ग का बर्णन है अर्थात् जिस में केवल लंबाई और चोड़ाई होती है और मुटाई नहीं परंतु इस पाठ में स्थूल वर्ग का बर्णन होता है जिसकी छः ओरें होती हैं और छहों आपस में बराबर और तास की गोट के समान वर्गरूपी होती हैं और इस स्थूल वर्ग की शकल जो पहले नकुशे में है इस रीति से लिखी है जैसी सामने से दीखने में आवे और देखनेवाले की आंख स्थूल पदार्थ के ऊपर के तले से तनक ऊंची रहे कोई जानते हैं कि इस स्थूल की जो आकृति ऐसे स्थान पर देखने से दृष्टि आती है उसे इस रीति से लिखने को जैसे उस नकशे में है कारीगरों ने बनाया है परंतु यह बात नहीं है वह सूरत जैसी लिखी है यथार्थ में आंखों को वैसी ही दिखाई देती है और ऊपर के तले की दोनों लकीरों दाईं बांई अर्थात् (अ न) और (ह च) जैसे ठीक आपस में समानान्तर हैं वैसे ही नहीं दिखाई देतीं वरन जितनी परली ओर को बढ़ती जाती हैं उतनी ही आपस की

ओर झुकती हुई दीख पड़ती हैं ओर (न च) लकीर जितनी मुख्य दिशा में (अ ह) लकीर से दूर है उतनी ही बहुत पास दिखाई देती है परंतु यथार्थ में उन दोनों लकीरों के बीच उतना ही अन्तर है जितना (अ ह) ओर (ब ओ) के बीच में है परंतु (अ ह) ओर (ब ओ) ये दोनों लकीरें आपस में झुकती नहीं जैसी हैं वैसी समानान्तर दीख पड़ती हैं निदान जो तल कि यथार्थ में वर्ग होता है वह स्थान की वैपरीत्य से दृष्टि में वर्ग नहीं दीख पड़ता परंतु बुद्धि में सीमाओं की समानता वा लकीरों की माप से वा जिस प्रमाण से जो ज्ञान हो रहा है उसे बिना देखे जान लिया जाता है कि यह कि तल वर्ग है ओर यद्यपि मुख्य में सब कोने समकोन हैं परंतु यहां उन में से दो अर्थात् (अ न च) ओर (ह च न) अधिक कोने होते हैं ओर दो अर्थात् (न अ ह) ओर (च ह अ) न्यून कोने दिखाई देते हैं॥

ऐसी शकल की नक़ल उतारने की यह रीति है कि नवें पाठ के अनुसार पहले (अ ब ह ओ) वर्ग बनावें उसके पीछे (न च) की दूरी (अ) से ठहरालें परंतु देखनेवाले की आंख जितनी स्थूल पदार्थ के ऊपरवाले तल से ऊंची हो उसी के आधीन इसका ठहराना है जैसे आगे व्यौरेवार बर्णन किया जायगा अब काग़ज़ पर लिखे हुए की नक़ल करने की रीति बताई जाती है कि जो दूरी (न च) ओर (अ ह) के बीच में है उसे (अ ह) ओर (ब ओ) के अंतर के साथ मिलाओ तो देखोगे कि उसकी अपेक्षा वह केवल चौथाई है इस से उसी अन्तर पर एक (न च) लकीर खींचो ऐसी कि (अ ह) के समानान्तर हो इसके पीछे (अ) ओर (ह) बिन्दियों से (अ ब) ओर (ह ओ) लकीरों को खींचो यहां तक कि वे ऊपर की ओर (न च)

लकीर से (ज) और (त) बिंदियों पर मिलें फिर (न) की दूरी (ज) से और (च) की (त) से निश्चय करके (न) और (च) पर चिन्ह करो और (न अ) और (च ह) लकीरों को खींच दो और जो लकीरें (न) (अ) (ब) (ओ) (ह) (च) कोनों पर मिलती हैं उन से जो खड़ी हुई शकल है सोई स्थूल की आकृत है जो दृष्टि में दिखाई देती है और (न च ज) और (ज अ) और (च त) और (त ह) कृत्रिम लकीरें समझाने के लिये खींची गई हैं अब उन्हें मिटेल डालो इसी तरह जो लकीरें अगले पाठों में कृत्रिम हों उनको भी मिटेली गई समझा चाहिये और जो रीतें छठे और आठवें पाठों में लिखी गई हैं उनका लाभ और अभ्यास नवसिखों को इसी पाठ में समझ पड़ेगा ॥

बारहवां पाठ ॥

इस पाठ में (अ ब ह ओ) एक यष्टि घन है जिसके ऊपर का तल उसी तरह दिखाई देता है जैसा पिछले पाठ में कहा गया और उसके तुल्य दाहिनी तरफ़ एक और शकल है यद्यपि उसकी नक़ल उन रीतों से भी हो सक्ती है जो पिछले पाठों में लिखी गई परंतु हम उसकी एक और रीति कहते हैं पहले (ब भ) आधार की लकीर खींचो और (ओ) पर उसके समान खण्ड करो और (ब ओ) के तुल्य (ब न) लम्ब खड़ा करके उसके समान (क ओ) और (ड भ) दो लम्ब खड़े करो और (ल क ड) एक लकीर खींचो अब देखो कि दसवें पाठ में जो शकल लिखी गई थी वही बन गई परंतु इस में और उस में केवल इतना ही अंतर है कि उस में छोटा भुज आधार थी इस में बड़ा भुज आधार है और एक (अ ल) लकीर खींचो जो (ल व) के दूने की तिहाई

हो और उसके तुल्य (ह क) को बनाओ और (अ ह) को मिला दो यह सामने की तरफ़ बनी अब पिछले पाठ में जैसा उसके अनुसार ऊपर का (अ न घ ह) तल बनाओ और (म) बिन्दी पर एक लकीर खींचकर ऊपर की तरफ़ के (क य म ङ) वर्ग को पूरा करो और इन रीतों को अच्छी तरह समझ परीक्षा करलो और अभ्यास करो इसलिये कि तुम्हारे मन में बैठ जाय और ये बातें तुम्हारे सामने ऐसी सुगम होजायं जैसे पिन्सिल को हाथ में लेना ॥

जानना चाहिये कि (अ न च ह) समानांतर चतुर्भुज मुख्य दिशा में एक वर्ग है और इसी तरह (क य म ङ) भी एक वर्ग है परंतु दूसरे की अपेक्षा नीचा है इसलिये दृष्टि में अधिक चौड़ा दीख पड़ता है भला प्रयोजन हो चुका अब (म स) लकीर को मिटा डालो ॥

आयत की निष्पत्ति जानने के लिये सदा यह रीति स्मरण रखनी चाहिये कि उसकी छोटी तरफ़ पर एक वर्ग ध्यान करके उसके वर्ग के भुज से बड़ी तरफ़ की अटकल करे और जो भुज कि समीप हैं उनकी आपस की चौड़ाई का बिचार करना अर्थात् जांचना कि एक दूसरे की अपेक्षा कितनी बड़ी है इस पाठ में बड़ी आवश्यक बात यही समझने की थी सो वर्ग के भुजों पर ध्यान करने से अच्छी तरह निश्चय हो सक्ती है क्योंकि वर्ग के भुजों मे कभी निष्पत्ति का अंतर नहीं होता वे सदा तुल्य रहती हैं ॥

इस विद्या के सिखलानेवाले इस रीति से नवसिखों को बहुत अच्छी तरह सिखला सक्ते हैं कि उनको कई प्रकार के आयत दे दिये जायं और जो रीतें ऊपर वर्णन की गई हैं

उन में प्रश्न किये जायं इसलिये कि उनको अभ्यास पड़ जावे और नवसिखों को इन रीतों के अनुसार चाहिये कि आपस में एक भुज की लम्बाई की अटकल दूसरी की अपेक्षा अपनी बुद्धि में वर्ग से कर लिया करें तो इस बात में उनको अच्छा अभ्यास हो जावे सब शिल्पकार चित्रकारी विद्या में इसी रीति को बरतते हैं बिशेष कर इमारतों के नक्शह बनाने में और यह भी स्मरण रखना चाहिये कि जो लकीरें मुख्य दशा में समानांतर हैं वे बहुधा झुकी हुई जान पड़ती हैं अर्थात् जितनी देखनेवाले से दूर होती हैं उतनी ही आपस में पास झुकी हुई दीख पड़ती हैं यहां हम एक बहुत अच्छी लाभकारी रीति नवसिखों को बताते हैं उनको उचित है कि स्मरण रक्खें और अच्छी तरह समझ लें ॥

रीति

जो दो बस्तु बराबर मुटाईवाली इस तरह रक्खी जायं कि एक देखनेवाले से पास हो और दूसरी दूर तो दूरवाली छोटी दिखाई देगी और पासवाली बड़ी इसी तरह जो एक बस्तु कई ख़ानों में रक्खी हो और देखनेवाले की आंख से एक ख़ाना दूसरे ख़ाने की अपेक्षा अधिक दूर हो तो दूरवाला छोटा दीख पड़ेगा और छोटा दिखाई देना हर एक बस्तु का सदा उसी संबंध में है कि जितनी वह वस्तु देखनेवाले से दूर हो ॥

तेरहवां पाठ ॥

इस पाठ में दो आयत स्थूल मिले हुए इस डौल पर बने हैं कि एक अपनी लंबी बाज़ू पर पड़ा हुआ है और दूसरा उसके पीछे अपने छोटे भुज पर खड़ा है सामनेवाला हूबहू

रक्खे कि यह उस से कम चोड़ी हो क्योंकि उसकी अपेक्षा उंचाई में आंख से पास है और (ड स) (ल म) (न च) (अ ह) (ब ओ) लकीरें सब आपस में समानान्तर हों और (ल ड) (अ न) का आपस में मेल बराबर हो इसी तरह (म स) और (ह च) भी एकसी झुकी हुई हों और (ल न च म) समानान्तर चतुर्भुज भुजों की निष्पत्ति में (अ ब ह ओ) की तुल्य हो परंतु डील डोल में उस की अपेक्षा छोटा हो क्योंकि वह दूर है और यह पास और जब लकीरें और सारे खण्डों की निष्पत्ति अच्छी तरह देख लीजावे और अपना मन कहे कि हां दोनों मंज़िलें सारी ठीक हैं तब (झ त क ज) खड़े हुए आयत क्षेत्र के बनाने का विचार किया चाहिये और जैसे बारहवें पाठ में (अ ब ह ओ) का बनाना बताया गया है उसी तरह इसे भी पूरा करें परंतु पिछले पाठ के समान पहले (झ) और (ज) की जगह ठहरा-लेवें और जब यह सब हो जाय तो (स ड) और (म ल) और (च न) बिन्दीवाली लकीरों को मिटा डालें ॥

मनुष्य के चिहरे के खींचने की रीतें ॥

जितने लोग इस विद्या को सीखते हैं उन सब के मनों में मनुष्य के चिहरे के बनाने का अभिलाष होता है विशेष कर एक आंख की तसवीर जिस में मुख्य के अनुसार आकृति और स्वरूप का बनादेना दो आंखों की तसवीर की अपेक्षा बहुत सुगम है और प्रत्यक्ष में इस विद्या के सीखनेवाले को यह अभिलाष चाहिये भी है क्योंकि संसार में इस से उत्तम कोई दूसरी बस्तु ऐसी नहीं है जिसकी तरफ़ ध्यान देने से उसे उतना लाभ हो सच तो यों है कि जो चतुराई मनुष्य की आकृति और छवि में है वह किसी बस्तु में नहीं देखने में

आती है इसके एक एक अंग का बनाव और संबंध ऐसा सिद्धांत और रचना के कारणों के अनुसार और उचित है कि कहने में नहीं आता निदान पूर्ण रचना करनेवाले की चतुराई और बिचार इस से सब दीख पड़ता है और जो चित्रकार किसी मनुष्य के सिर की तसवीर ज्यों की त्यों खींच दिखावे वही इस विद्या में परिपूर्ण और बुद्धिमान गिना जाता है सुन्दरता और छवि और स्वरूप का बनाना इसी विद्या के अधीन है और इस से आगे मनुष्य का विचार काम भी नहीं कर सक्ता मानो अपनी बुद्धि को दौड़ा के देवता और अपसराओं का विचार भी बांधे परंतु उसका अंत यहीं तक है मनुष्य के स्वरूप से बढ़कर कोई स्वरूप मनुष्य अपने ध्यान में भी नहीं ला सक्ता जो देवता राक्षस भूत वा परींद की कोई तसवीर कैसी ही बिगाड़कर और डरावनी बनाकर दिखावे तो वह भी इसी से तुल्यता रखती होगी मनुष्य की आकृत वह बस्तु है जो सदा हमारे सामने रहती है और सदा हम उस पर दृष्टि रखते हैं और सदा वह हमारे आनन्द और चैन का कारन होती है रचक भी उसकी सब बस्तुओं से अधिक दृष्टि में रखता है और अनुपम रचनेवाले के उत्तम बिचार और युक्ति अद्भुत रीति से इस में प्रगट होती हैं इसलिये चाहिये कि चित्रकार पहले इसका खींचना मन लगाकर सीखे और इस विद्या के सीख लेने से उसका अभीष्ट चाहे जो कुछ हो परंतु मनुष्य के चित्र का सीख लेना बहुत अवश्य है ॥

जानना उचित है कि जीवधारियों के पिंडे में कहीं सीधी लकीर नहीं होती इसलिये चित्रकार को चाहिये कि गोल और धनुषाकृति लकीरों के खींचने का अभ्यास करे जब तक एक

नियत रीति पर न चलेगा और उस पर हाथ न बैठावेगा तब तक जिन सूरतों की सूच्मता नवसिखों के ध्यान में भी आनी कठिन है उनके बनाने में हाथ डालना ऐसा है जैसा कोई अंधेरी कोठरी में टटोलवां चलता है इस दशा में यद्यपि हो सक्ता है कि संयोग से सीधे रस्ते पर आजावे परंतु संयोग में ऐसा विश्वास नहीं हो सक्ता जैसा कि रीति के अनुसार काम करने से सदा अभीष्ट के पूरा हो जाने का विश्वास रहता है और आगे को बृद्धि दीख पड़ती है संयोग के ऊपर क्या भरोसा है एक बार हो और फिर कभी चाहियें कि होवे ही नहीं और उसके ऊपर भरोसा करने से सिवाय भूल के एक यह भी बड़ा बिगाड़ है कि झूठा अभिमान हो जाता है इसलिये इस विद्या के सीखनेवाले को भी उचित है कि संयोग को कारण न समझे किसी कवि का यह बचन स्मरण रखने के योग्य है कि नव-सिखा जिस बात को सीखे पहले उसके अवयवों पर ध्यान करे और जब तक एक अवयव का बनाना न आजावे तब तक दूसरे पर हाथ न डाले क्योंकि ऐसा करने से समय वृथा जावेगा और थोड़े दिन का काम बहुत दिनों में आवेगा इसके सिवाय उचित है कि पहले धीरे ठीक बनाना सीखे फिर जल्दी पर मन दौड़ावे जैसे इसके अनुसार एक कहावत है॥

दोहा

एक बात को सीख के सीखो दूसरि बात॥
ज्यों पद युग एक साथ ही गमन करत सकुचात॥१॥

और तसवीर के खींचने में इतना ही बहुत नहीं है कि उसे उतार कर चुप हो रहें नहीं उसके ढंग और डौल को अच्छी तरह समझें और आगे के लिये स्मरण रक्खें और इस ध्यान पर न

भूले कि जल्दी २ सीधा सादा नक़्शा खींच कर पोथी भर लेने से काम पूरा हो जाता है यह बात ऐसी है जैसे कोई सराफ़ी वा कैथी अक्षर सीख कर अपना काम चलाले और उसे अच्छा लिखने का दावा नहीं हो सक्ता ऐसे यह भी मुसव्वरी का दम नहीं मार सक्ता प्रयोजन यह है कि जो काम एक बार अच्छी तरह मन लगाके और ध्यान से होता है उस में कितना ही समय बीतो और कैसा ही श्रम लगे सब स्वारथ हो जाता है और इस तरह की स्वभाव अंत को वृद्धि का कारण हो जाता है नवसिखे को चाहिये कि पहले अपने हाथ बैठालने का साधन क़लम को समझे यद्यपि उस में पहले कठिनाई अधिक पड़ेगी परंतु कुछ संदेह नहीं विश्वास रखना उचित है कि यही सादा औज़ार अर्थात् क़लम सब औज़ारों से अच्छा है हाथ का जमना और अच्छी तरह चलना और चित्र उभरा निकलना इस से आवेगा आगे को चित्रकारी वा बेल बूटे और नगीने आदि विद्याओं में बड़ा गुण दिखावेगा और जितना परिश्रम क़लम के पकड़ने मे पड़ेगा उतना सब उन विद्याओं के जल्द आजाने में निकल आवेगा और जिसका हाथ बेबस और कांपता हो वह क़लम के पकड़ने के अभ्यास से दृढ़ और ठीक हो जाता है और जब एक बार इस तरह बस में आजाता है तो फिर कोई औज़ार हो उसके पकड़ने में कभी रुकने का नहीं और क़लम से कोई बे ज़ढंगी नहीं हो सक्ती क्योंकि जो कुछ बनाना चाहते हैं पहले उसे अच्छी तरह समझ लेना होता है तब संभाल के ठीक २ लकीरें खींचनी पड़ती हैं और जो कोई भूल होती है तो सब नये सिरे से फिर बनानी पड़ती हैं दूसरी तरह से शुद्धता हो ही नहीं सक्ती और बने हुए का बिगाड़ना ऐसा नहीं

है कि जल्द स्मरण से उतर जावे इसलिये कई भूलों का होना नवसिखों को चोकसाई और शुद्धता से काम करने का स्वभाव डालती है सो यह बात पिनसिल और रवर (से जो पिन्सल की लकीरें मिटादेता है) नहीं हो सक्ती क्योंकि उसके भरोसे पर चोकसाई नहीं होती है और क़लम से जो कुछ बनाया जाता है सो फिर भी बन सक्ता है और यही इस विद्या की भलाई का एक बड़ा भेद है नवसिखों को चाहिये कि पहले ठीक सामने से मनुष्य के मुँह का डोल खींचना सीखें क्योंकि वह सुगम भी है और उस से सिद्धांत भी उसे निश्चय हो सक्ते हैं और चिहरे से छवि और शान निकालने का पहले बिचार न करे जितने अवयव हैं उन्हीं के बनाने का अच्छी तरह रीति पूर्वक अभ्यास करे जो सुन्दर लकीर ओठों के मिलने से उत्पन्न होती है पहले उसे खींचे फिर उसी लकीर पर मुंह का फैलाव दिखावे और उसका केन्द्र ठहरावे और ये सब कल्पित बिंदियों से वा हलकी लकीर से बनावे इसके पीछे यह अभ्यास करे कि चित्र इन सब रीतों में मुख्य के अनुसार बनाने लगे तब ओठों की मोटाई निकालनी सीखे और जब यह सब ठीक हो जायगा तो बिंदियों का मिला देना और चिहरे की लकीर ठीक मुख्य के अनुसार खींच देनी बहुत कठिन न होगी और यही सारी जड़ है संपूर्ण तसवीर इसी पर पूरी हो जायगी नवसिखे को उचित है कि पहले इतने ही में अच्छी तरह अभ्यास करे और यहां तक इनको बनालेने लगे इसी रीति से कि सीधी लकीरों के खींचने की चाह न रहे उनके बिना ही तसवीर ठीक खींच लिया करे बरन उनको अपनी बुद्धि में भी न लावे वैसे ही सब अवयवों की निष्पत्ति और अन्तर

अपनी बुद्धि में बैठा लिया करे और उन्हें ऐसी ठीक और शुद्ध बनावे मानो उसके सामने काग़ज़ पर पहले ही से लिखे हुये थे इसके अभ्यास में अच्छी तरह मन लगाना चाहिये क्योंकि जब किसी का चित्र उतारना होगा तब भी ये ही सब सिद्धांत बरतने पड़ेंगे जो नवसिखा इन उदाहरणों में जो इस भाग के अंत में लिखे हैं किसी पर अभ्यास करते २ थक जावे और ठीक नक़ल न उतार सके तो तनक ढारस बंधने के लिये उसे छोड़ कर दूसरे की ओर ध्यान लगावे परंतु साया के बनाने की परीक्षा न करे बहुधा सीखनेवाले स्मरण करेंगे कि इस पाठ का अभ्यास बहुत कठिन था परंतु इसके साथ यह भी स्मरण रखना उचित है कि जितना उसे स्मरण रक्खेंगे उतना ही आगे की कठिनाइयों को सुगमता से खोल सकेंगे ॥

लकीरों के अभ्यास के पीछे साया डालने का अभ्यास चाहिये इसलिये कि चिहरे की गुलाई और उभरापन दीख पड़े और मुंह का डौल भी अच्छी तरह दिखलावें और जो बड़े २ चिन्ह देखने में हों पहले उन्हें बनावें इसलिये कि अधिक सूक्ष्मताओं और गूढ़ भेदों के आजाने में सुगमता हो और मुख्य से चित्र बनाने का बोध भी होवे और स्वभाव देखने और जी लगा करके खींचने का पड़े ये सब बातें बहुत अवश्य हैं और लकीरों से चिहरे की छवि और शान दिखा देनी नवसिखे को कठिन है जब तक और बातें सीख न लेवे तब तक उस ओर हाथ न दौड़ावे इसलिये जो उदाहरण इस भाग के अंत में लिखे हैं उन में दिखा दिया है कि इस तरह सीढ़ी २ हो कर कठिनाई की ओर चलें और एक २ उदाहरण में अच्छी तरह अभ्यास करें और हाथ बैठावें और उसके सिद्धांतों को समझें ॥

बेल बूटे बनाने के सिद्धांत ॥

जो भिन्न सूरतें बहुधा इस जगत रूपी चित्रालय में पाई जाती हैं उनके कुछ नमूने पहले भाग के अंत के पत्रों में दिखा दिये हैं अब इस भाग में कई उदाहरण अंडाकृति शकलों के लिखे जाते हैं और ये सूरतें यद्यपि उद्भिजों में इतनी नहीं पाई जाती हैं जितनी गोल देखने में आती हैं परंतु तो भी पत्तों और फल फूलों और बीजों में बहुधा होती हैं जो छः लंबर के नक़शे को देखें तो इन उदाहरणों में यही अंडाकृति शकल चित्र की जड़ है और उस में थोड़े २ बनाने से और लकीरों के कटने वा निकालने वा उसी तरह की अंडाकृति शकल भीतर बाहर खींच देने से सुन्दरता आगई है और बहुधा पेड़ों के पत्ते और बीज एक ओर अंडाकृति और दूसरी ओर कई तरह की सूरतों के होते हैं निदान इस शकल का दूसरी तरह की शकल से मिलना वा उसी का दूसरी बार होना बहुत देखने में आता है इसके उदाहरण किसी अगले लंबर में जहां फुटकल सूरतों का बर्णन है वहां दिखाये जायंगे यहां केवल सादी अंडाकृति शकल का बर्णन होता है यह शकल वृत्त की अपेक्षा अधिक सुन्दर गिनी जाती है और दिखावटी बेल बूटे में भी यह बहुत बरती जाती है बरन उन में या तो इसी शकल को चित्र की जड़ ठहरा के ऊपर से और समारते हैं वा समारने के बीच उसे और सब तरह की शकलों से अधिक बढ़कर जानते हैं पुराने समय की बहुधा चित्रकारी में जहां बहुत सुन्दरता पाई जाती है वहां तुम देखोगे कि केवल इसी शकल के उलट फेर से यहां तक कि बाज़े शिल्पकार बिचारते हैं कि पुराने समय के बहुधा दिखावटी बरतन केवल इसी अंडाकृति शकल की फुट-

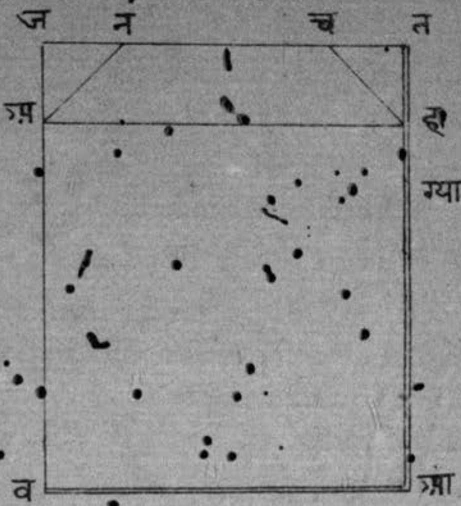
कल रीतों से दिखाने के लिये बनाये जाते थे जो कोई मनुष्य वस्ली वा मोटा कागज़ लेकर बैठे और बहुतसी अंडाकृति शकलें उस में से काटे तो निश्चय है कि कई तरह के सुन्दर और नये डौल के बूटे उस से उत्पन्न होंगे और इसी रीति को यूनानवाले भी बरतते थे परंतु इसका सिद्ध होना पूरा नहीं हुआ पिछले किसी लंबर में पुराने समयों के कोई दिखावटी सुन्दर बरतनों के चित्र दिखाये जायंगे उनको लोग बिचारते हैं कि इसी रीति से बनाये गये थे सांझ के समय जी बहलाने के लिये यह काम भी बहुत अच्छा है कि वस्ली कागज़ को ले बैठें और उस में से बड़ी छोटी कई डौल की अंडाकृति शकलों के दो २ चार २ जोड़े काटें और एक २ प्रकार का धूंवां वा काले रंग के पट्टे पर कई डौल से मिला २ कर रक्खें जभी कोई शकल मनोहर बनजावे उसके समान एक साफ़ कागज़ पर दूसरे काटे हुए जोड़ों से बना कर पिन्सिल की नोक उनके किनारों के गिर्द कागज़ पर फेरें परंतु पट्टे पर पहली बनी हुई शकल को न छोड़े क्योंकि जो उस में तनक भी हल चल हो जायगी तो सारा बना हुआ खेल बिगड़ जायगा और फिर कभी वह सुन्दरता हाथ न लगेगी और नवसिखे को पिन्सिल की लकीरों का खींचना और शकल को सीधा रखना तनक कठिन पड़ेगा इसलिये उसे बहुत जी लगाना चाहिये जिस में बेल बूटे ठीक बनें और अच्छे दीख पड़ें परंतु और चित्रकार के समान इस में भी बहुत अभ्यास चाहिये जो काली और सफ़ेद वस्ली वा कागज़ की अंडाकृति शकलें काटें तो वे और भी अधिक उपकारी होंगी क्योंकि रंग से बेल बूटा साफ़ दिखाई देगा और नीचे ऊपर वाले तांस के किनारों पर पिन्सिल फेरने से एक

सुन्दर लहरोंदार लकीर बन जावेगी और उस में से कोई नमूना निकलेगा इसके बर्णन को ब्योरेवार अगलेभाग में करेंगे क्योंकि उस में केवल अंडाकृति शकल नहीं होती वृत्त का भी लगाव है अब वृत्त और अंडाकृति शकलों के खींचने की ऐसी रीतों को बताते हैं जो परकार और औज़ार हिन्दसी न हों तो उनके बिना भी यह काम निकल आवे निश्चय है कि जो रीतें हम लिखते हैं उनको बहुतेरे जानते होंगे जो वृत्त बनाया चाहें तो एक धागालेकर उसका एक सिरा पिन्सिल में और दूसरा किसी सुई वा कांटे आदि नोकदार बस्तु में वा और उसकी नोक कागज़ पर चढ़ा कर बांये हाथ से दृढ़ पकड़े रहें और सीधे हाथ से पिन्सिल को उसके गिर्द कागज़ पर फिरावें और डोरे को तना रक्खें इस रीति से अच्छा वृत्त बन जायगा और पिन्सिल और उस नोक वाली बस्तु के नोक के बीच जितना लंबा डोरा होगा उतनी ही उस वृत्त की त्रिज्या होगी और जो डोरा भी न हो तो एक कागज़ की धज्जी लेकर उसके एक सिरे में पिन्सिल पिरोलें और दूसरी ओर सुई की नोक से उसे दबा रक्खें यों भी काम निकल आवेगा और अंडाकृति शकल बिना प्रकार के और किसी औज़ार हिन्दसी के इस तरह बन सक्ती है कि कागज़ को पट्टे पर रखकर दो सुइयां इतनी दूरी पर रक्खें कि शकल की लकीरें परिधि से तनक ही भीतर की ओर हों और धागे के दोनों सिरों पर गांठ देकर धागे को दोनों सुइयों में पहनावें और धागा इतना बड़ा हो कि जो पिन्सिल उस में डाल के सुइयों के सीध एक तरफ़ को खैंचें तो उस तरफ़ की सुई से थोड़ा निकलता रहे इसके पीछे उस धागे के भीतर कागज़ पर सुइयों के गिर्द पिन्सिल को फिरावें और धागे को अच्छी तरह तना रक्खें इस

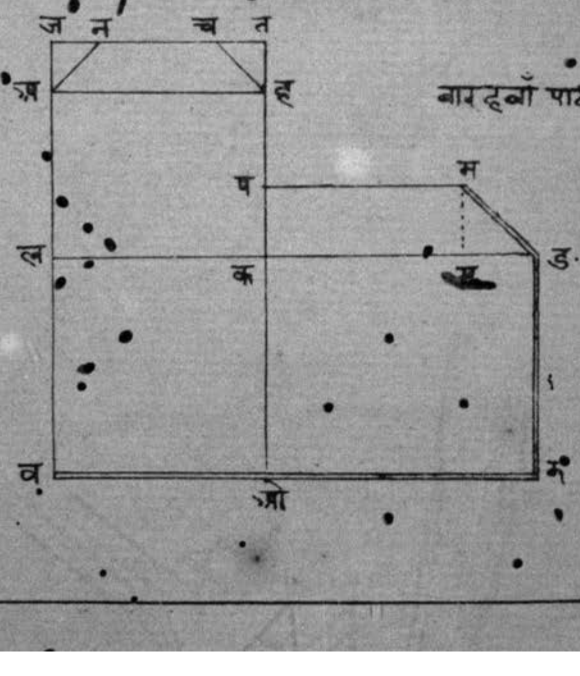
तरह अंडाकृति शकल यद्यपि गणित की रीतों के अनुसार सरासर ठीक तो न होगी परंतु नवसिखें के काम के योग्य अच्छी बन जायगी और एक रीति ऐसी शकल के बनाने की यह भी है कि सीधी लकीर खींच लें उसके ऊपर दो वृत्त से इस तरह बनावें कि उनके बीच में कुछ अंतर रहे और हाथ को सभालकर उस लकीर के दोनों ओर समान दूरी पर एक वृत्त के सिरे से दूसरे के सिरे तक अंडाकृति शकल को पूरा करें और नवसिखें को उचित है कि इस पाठ में जो कुछ बताया गया है उसके ऊपर अच्छी तरह अभ्यास करें क्योंकि यह सब बहुत काम आता है और अधिक बुद्धि में बैठाने के लिये उदाहरण अगले भाग में जहां लहरदार लकीर के लाभों का वर्णन है उस स्थान में लिखे जायेंगे॥

॥ इति ॥

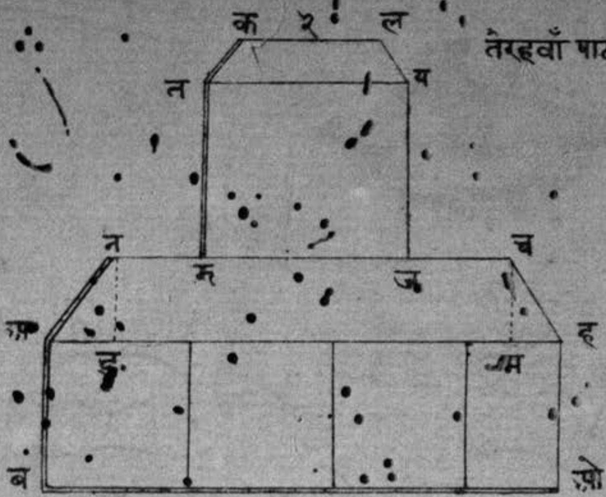
ग्यारहवाँ पाठ



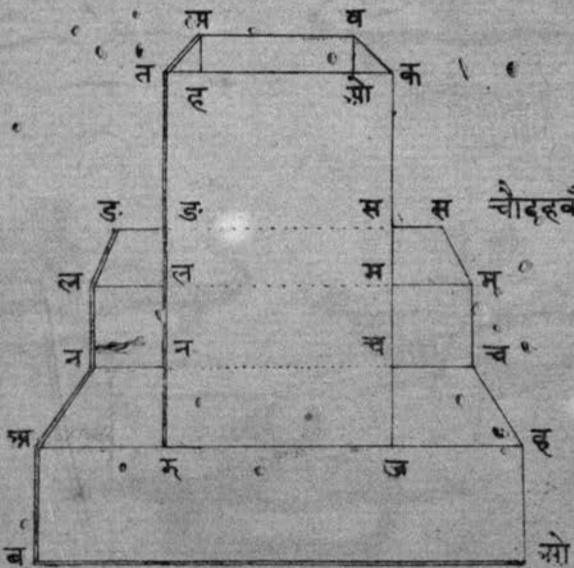
बारहवाँ पाठ

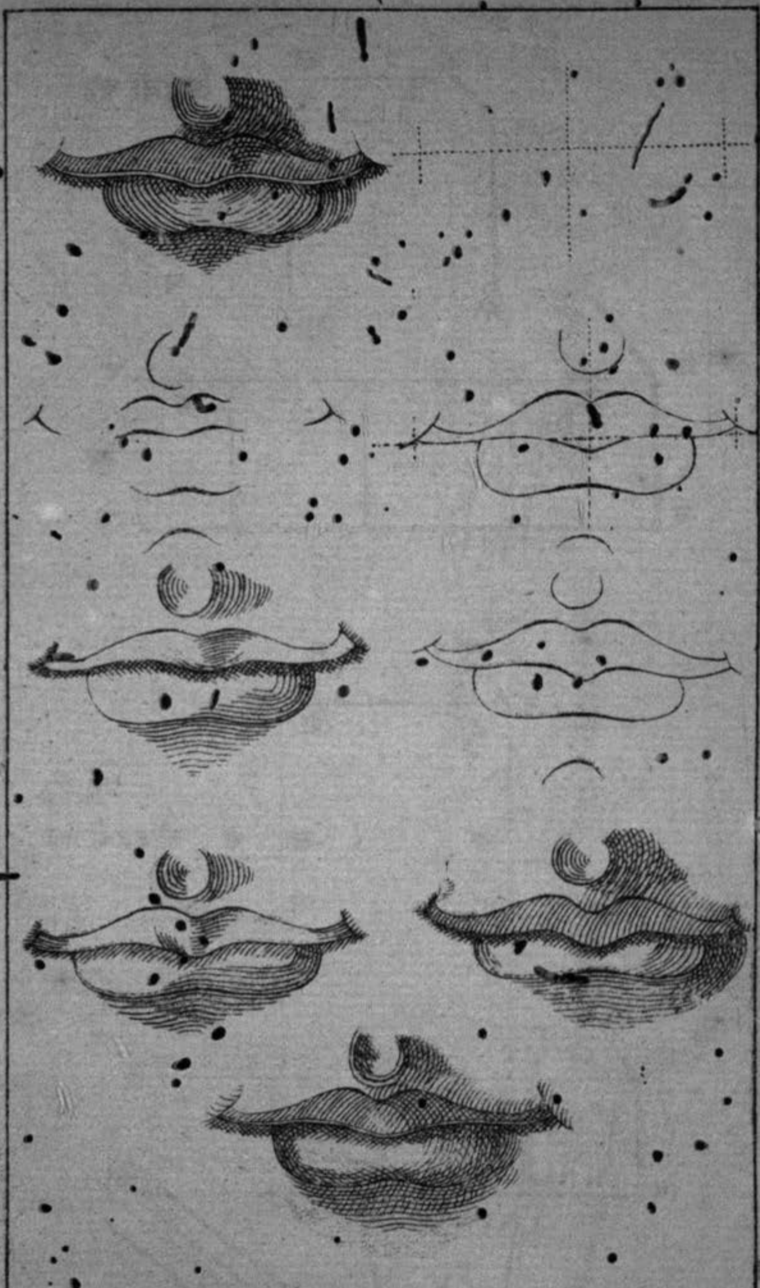


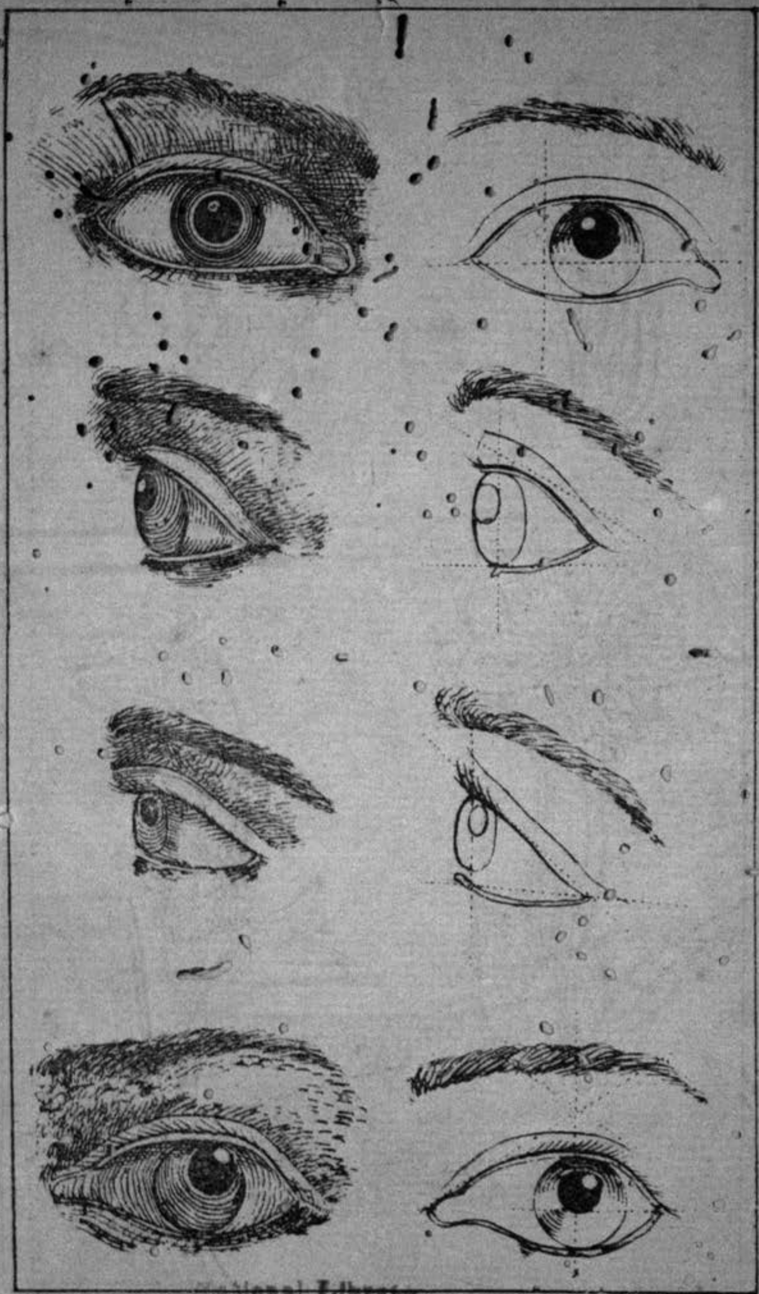
तेरहवाँ पाठ

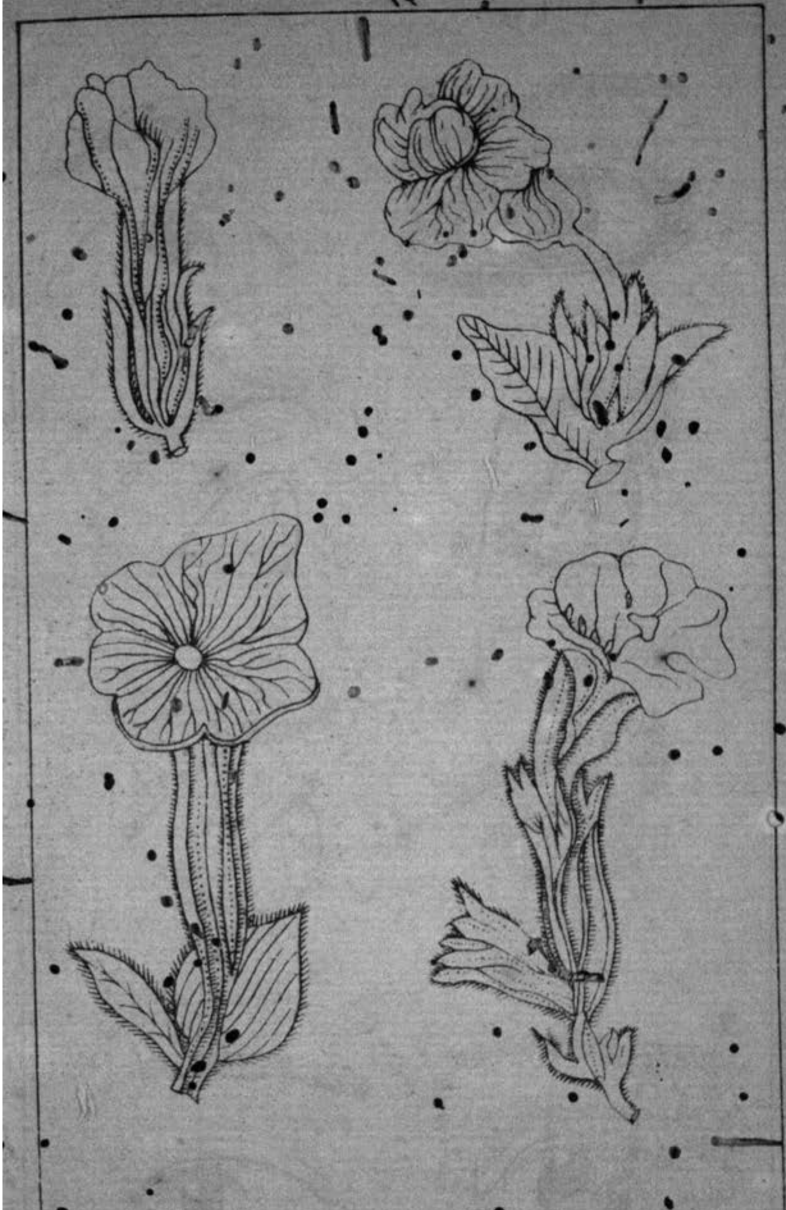


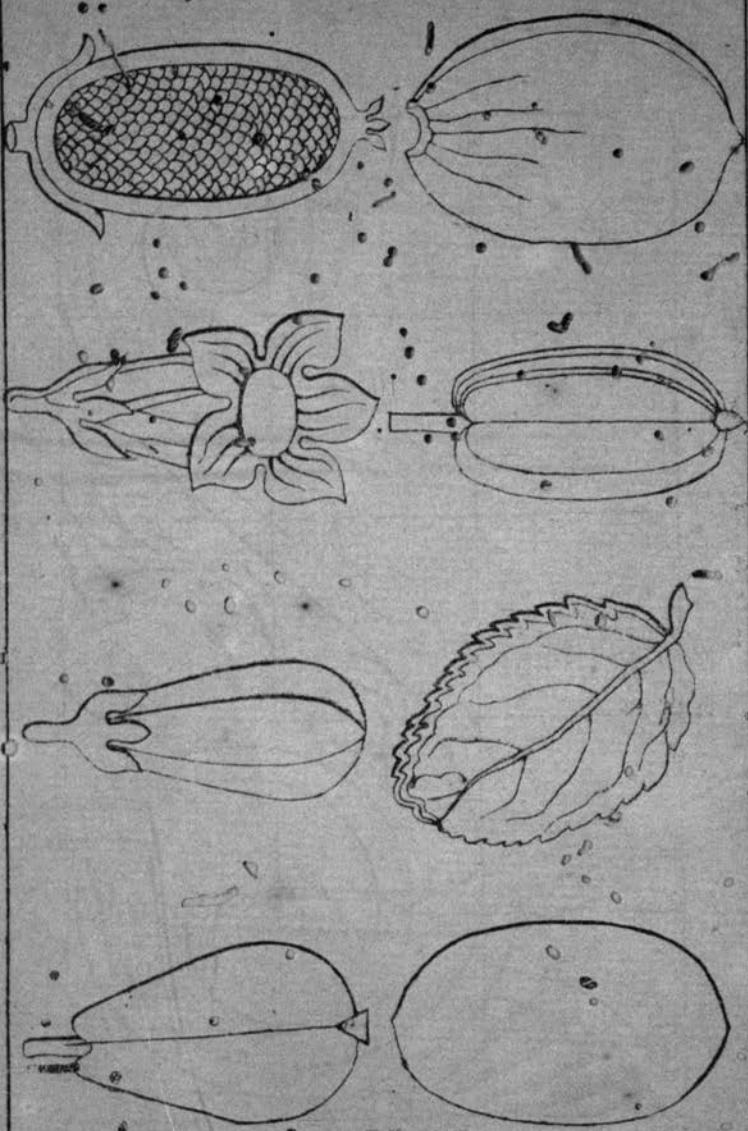
चौदहवाँ पाठ

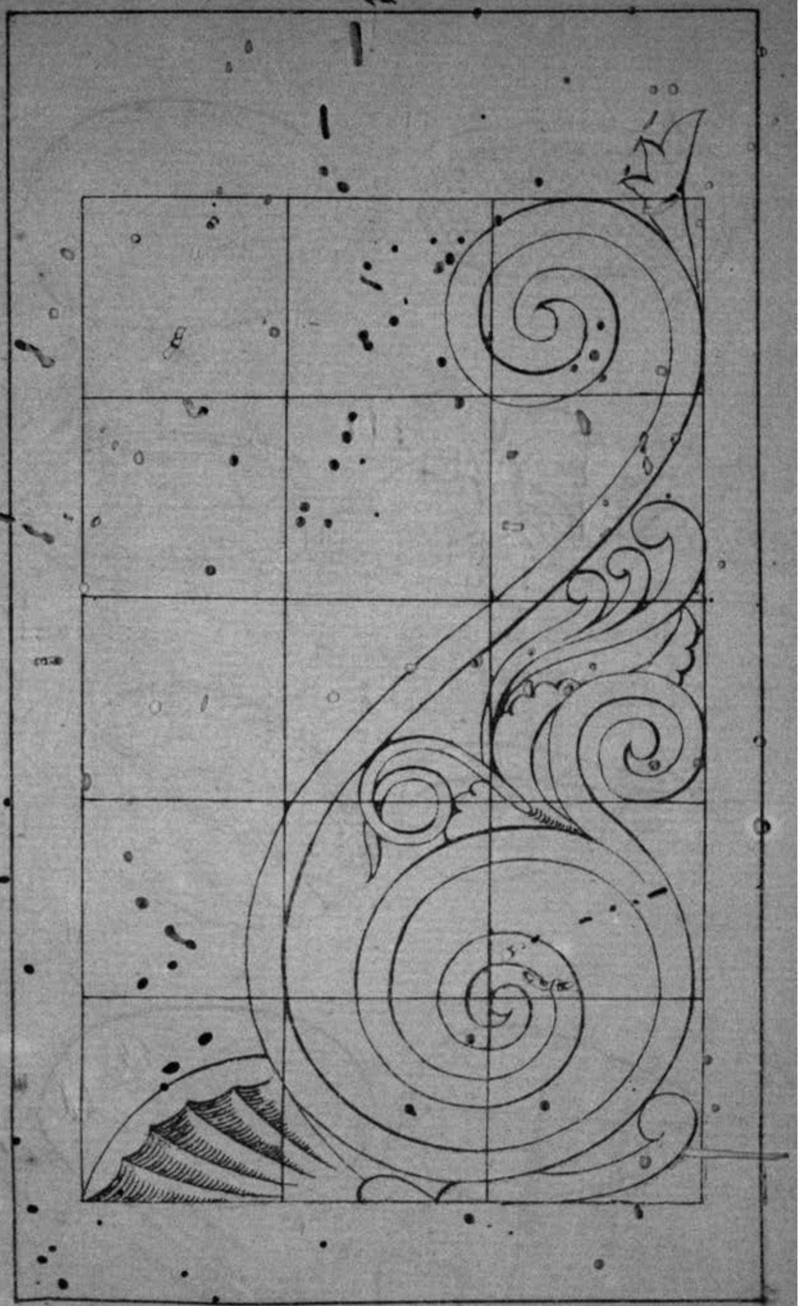




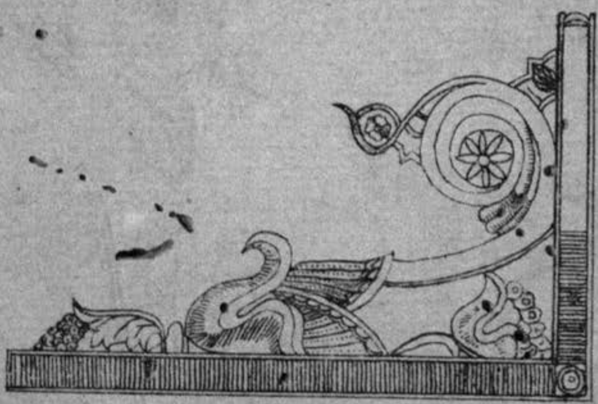


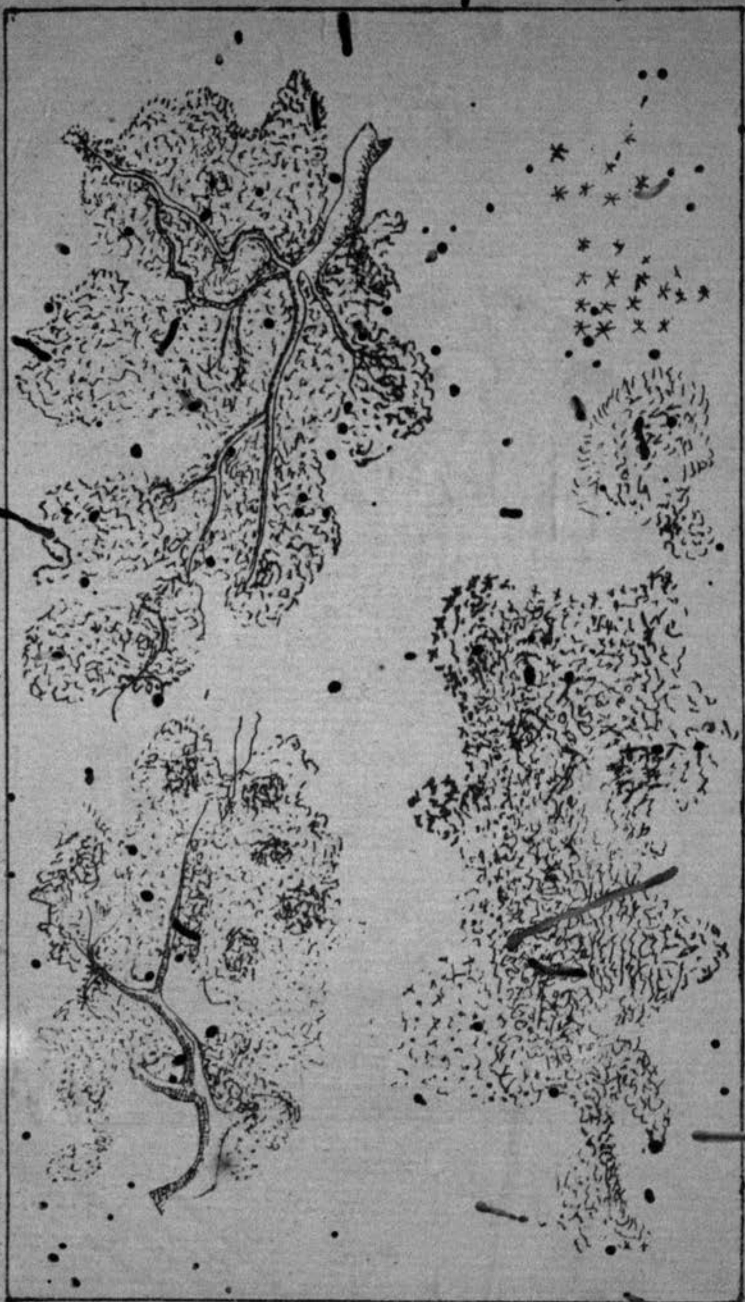












३९.

